नीला सियार

नीला सियार

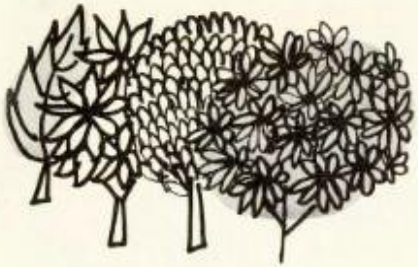

एक घने, हरे-भरे जंगल के किनारे एक गाँव के निकट एक डरपोक सियार रहता था. उसका नाम था '*लंबी चीख*'. अपना अधिक समय वह एक गुफा के भीतर छिपकर ही बिताता था क्योंकि वह दूसरे सब जानवरों से बहुत डरता था.

कभी-कभी '*लंबी चीख*' डरावने सपने देखता था. वह सपना देखता कि एक विशाल बाघ, जिसके पंजे नुकीले और भयंकर थे, उसका पीछा कर रहा था.

'*लंबी चीख*' सिर्फ उस समय अपने को सुरक्षित महसूस करता था जब, संध्या होने पर, वह अन्य सियारों के झुंड में शामिल होकर संध्या का गीत गाता था. उस पल वह अपने को बहुत विशिष्ट समझता था, क्योंकि बाकी सियारों की तुलना में वह बहुत ऊँचे और लंबे समय तक चीख सकता था.

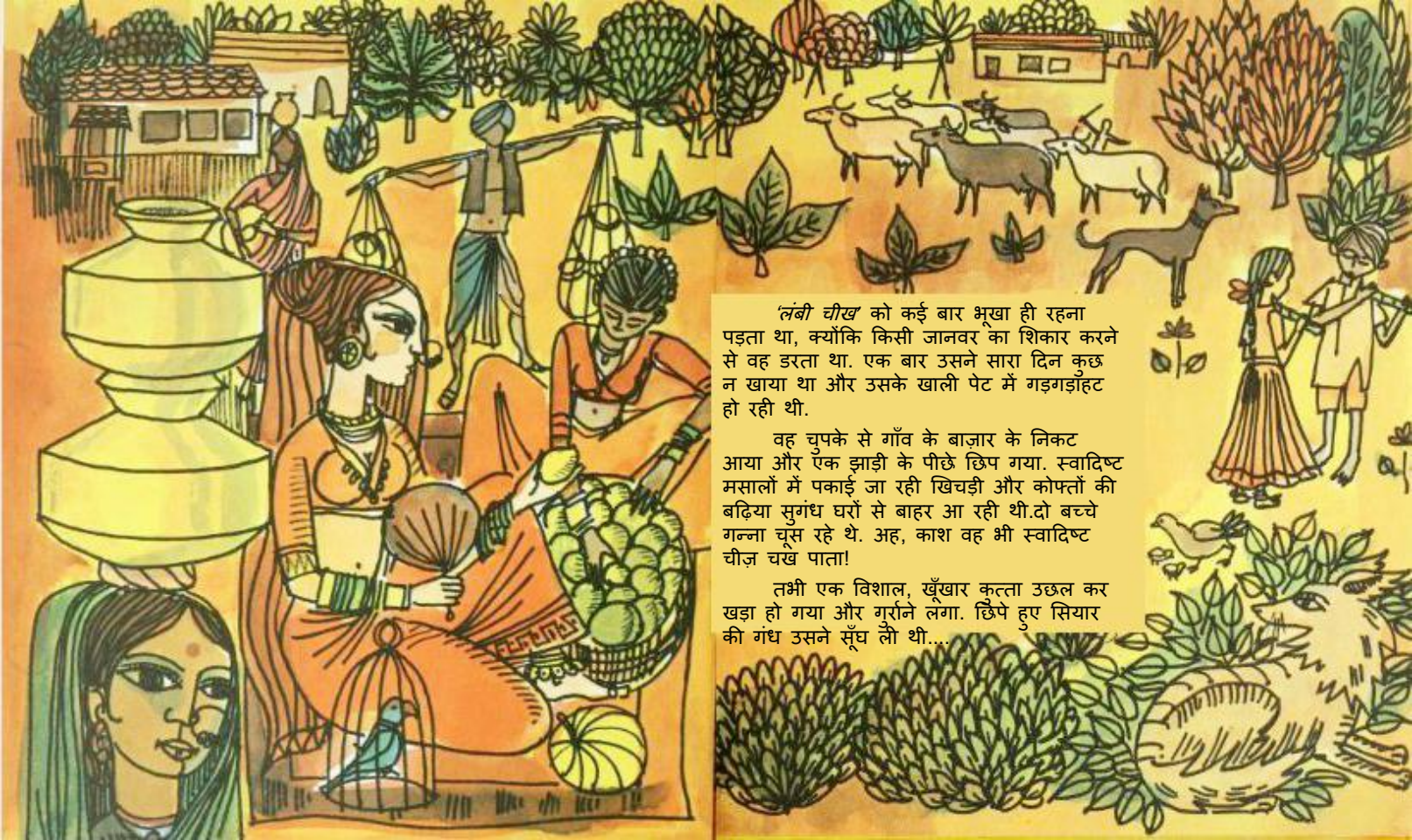

'लंबी चीख' को कई बार भूखा ही रहना पड़ता था, क्योंकि किसी जानवर का शिकार करने से वह डरता था. एक बार उसने सारा दिन कुछ न खाया था और उसके खाली पेट में गड़गड़ाहट हो रही थी.

वह चुपके से गाँव के बाज़ार के निकट आया और एक झाड़ी के पीछे छिप गया. स्वादिष्ट मसालों में पकाई जा रही खिचड़ी और कोफ्तों की बढ़िया सुगंध घरों से बाहर आ रही थी.दो बच्चे गन्ना चूस रहे थे. अह, काश वह भी स्वादिष्ट चीज़ चख पाता!

तभी एक विशाल, खूँखार कुत्ता उछल कर खड़ा हो गया और गुर्राने लगा. छिपे हुए सियार की गंध उसने सूँघ ली थी....

अचानक गाँव के सारे कुत्ते उसके पीछे दौड़ पड़े. जान बचाने के लिए '*लँबी चीख*' बेतहाशा भागने लगा.

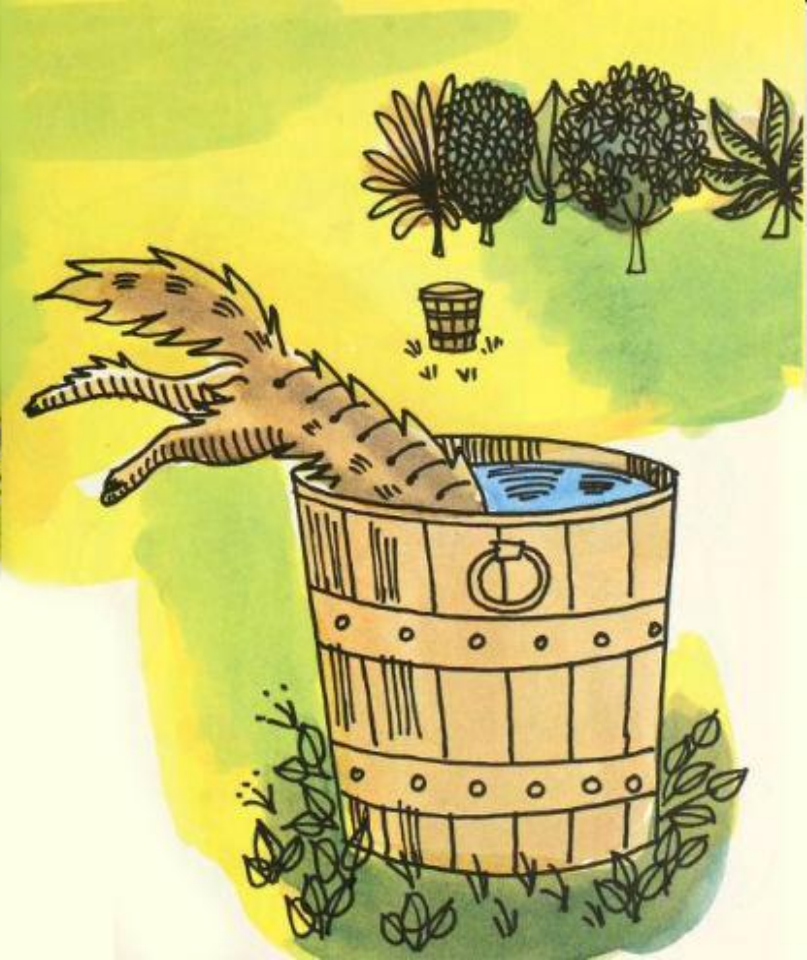

भयंकर कुत्तों के कड़कड़ाते जबड़ों से सियार कुछ ही फुट दूर था. बचने के लिए वह एक रंगरेज़ के घर के आँगन में घुस गया. जैसे ही वह आगे दौड़ा, रस्सी पर लटकी रंगी हुई साड़ियाँ उसके चेहरे से टकराईं.

अपनी बची हुई शक्ति लगा कर सियार ज़ोर से कूदा और छपाक से नीले रंग से भरे हुए एक हौज़ के बीच में जा गिरा.

नीले रंग में डुबकी लगने पर बेचारे सियार का दम ही घुट गया. लेकिन कुत्ते इतने निकट थे कि खाँसने या छींकने का वह साहस न कर पाया.

वह हौज़ के तल पर चुपचाप दुबका रहा. उसका शरीर ठँडे, नीले रंग में पूरी तरह डूबा हुआ था. हौज़ में रखा रंग नीलकंठ के नीले रंग से भी अधिक चमकीला था.

कुत्ते उस हौज़ के आसपास चक्कर लगाते रहे और सूंघते रहे, पर सियार का कोई सुराग उन्हें न मिला. आखिरकार, कुत्तों को विश्वास हो गया कि सियार बच निकला था, और वह सब वहाँ से चले गये.

जब चारों ओर शांति हो गई तो '*लंबी चीख*' ने अपनी नाक हौज़ के बाहर निकाली. उसने हर तरफ सूंघा. कुत्तों की गंध बहुत दूर थी. फिर उसकी आँखें हौज़ के किनारे के ऊपर आईं. कोई कुत्ता उसे दिखाई न दिया.

'*लंबी चीख*' ने कुछ आवाज़ें सुनीं. आवाज़ें निकट आ रही थीं. रस्सी पर लटकी जो साड़ियाँ सूख गई थीं उन्हें रस्सी से उतारने के लिए रंगरेज़ का परिवार आँगन के अंदर आ रहा था. जब एक चमकदार, नीले जानवर को एक हौज़ से बाहर कूदते उन्होंने देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गए.

सारा परिवार चीखने-चिल्लाने लगा.....

'लंबी चीख' के मन में बस एक ही बात थी-यहाँ से बच निकलो. जितनी तेज़ अपनी लंबी टाँगों पर वह दौड़ सकता था उतनी तेज़ अपने जंगल के घर की ओर वह दौड़ पड़ा.

अनोखे नीले जानवर को देख कर जंगल के सारे जीव गाँव के लोगों से भी अधिक हैरान हुए.

“शायद इसके ज़हरीले दाँत हों,” बाघ ने सोचा. “कौन जाने वह कितनी ताकत से प्रहार कर सकता है और उसके नाखून कितने तेज़ हैं?” खरगोश डर से चिंता करने लगा.

“क्या देवराज इंद्र ने हम सब पर शासन करने के लिए इसे यहाँ भेजा है?” चतुर बंदर सोचने लगे.

इसलिए, अपनी सुरक्षा के लिए, सब जानवरों ने वहाँ से भाग जाना ही उचित समझा.

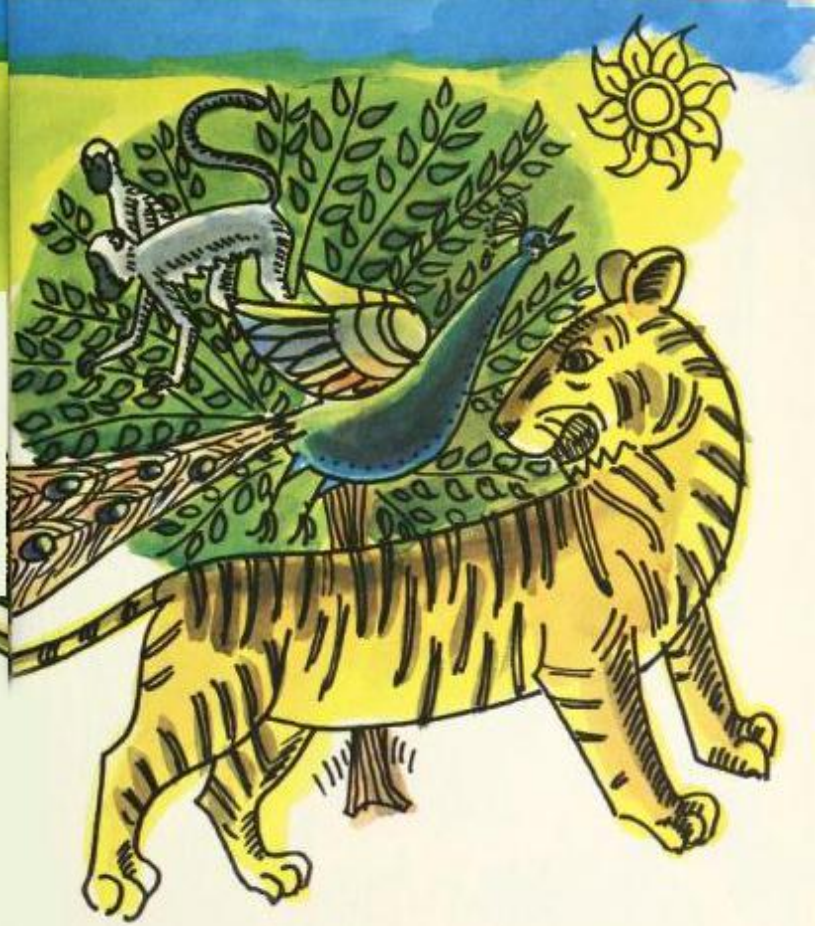

जब सारे जानवर दूर चले गए तो *'लंबी चीख'* बरगद के एक पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगा.

उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि जंगल के सबसे विशाल और सबसे शक्तिशाली और सबसे चतुर जानवर उससे भयभीत थे.

'लंबी चीख' ने गहरी साँस ली. उसका सीना चौड़ा हो गया और वह अपने आप को बड़ा बहादुर और भयंकर समझने लगा.

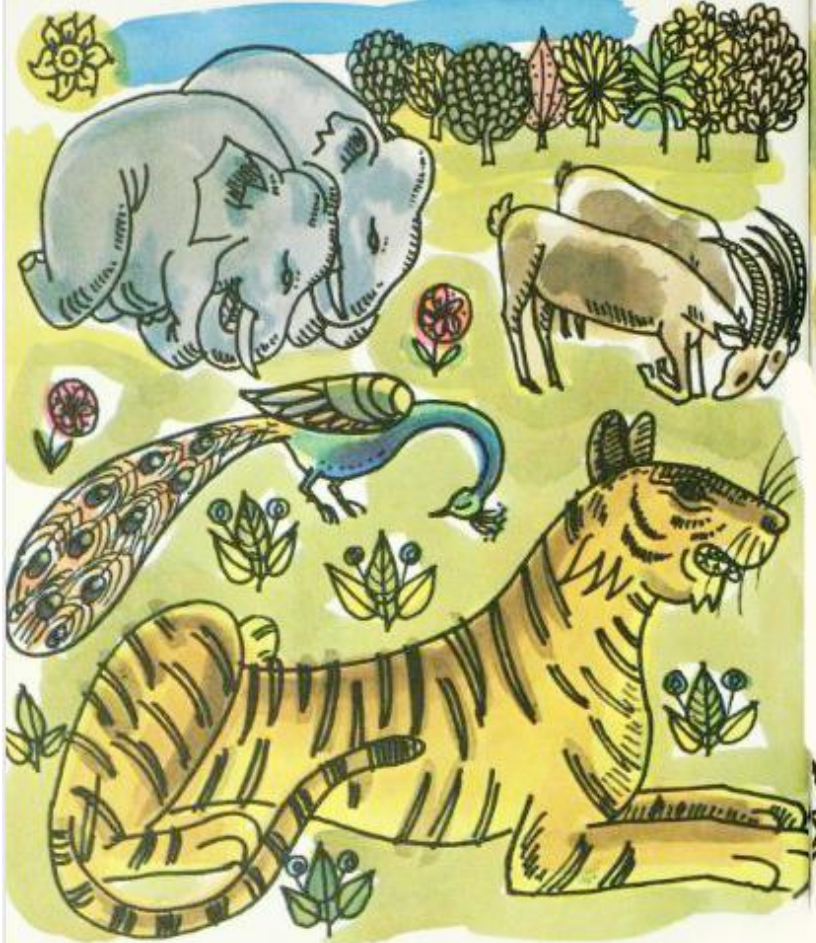

चूँकि जंगल के सब जानवर उससे डरते थे, *'लंबी चीख'* ने स्वयं को उनका राजा घोषित करने का निर्णय लिया. शीघ्र ही वह घमंडी बन गया और सब पर धौंस जमाने लगा.

उसने बाघ को अपना मंत्री और मोर को संदेशवाहक बना दिया. बंदर बारी-बारी उसे पँखा झलते और, उससे बात करने से पहले, सब जानवर झुक कर उसका अभिनंदन करते.

उसने जानवरों को आदेश दिया कि उसके लिए बहुत सारा स्वादिष्ट खाना लेकर आयें-रसीले आम, मीठे गन्नों के गट्ठर, और ढेर सारे ताज़ा चूहे.

सिर्फ सियार ही वह जानवर थे जो नये राजा *'लंबी चीख'* के सामने झुकते नहीं थे. वह किसी सियार को अपना राजा मानने के लिए तैयार नहीं थे. इसलिए वह जंगल के दूसरे भाग में चले गए.

एक रात राजा *'लंबी चीख'* अपने मनपसंद टीले पर बैठा हुआ था. कभी-कभी उसका मन करता कि, अपनी विनीत प्रजा से दूर, कुछ समय के लिए वह कहीं अकेला रहे.

उसी पल रात की शांति अचानक भंग हो गई. सियारों का झुंड भयंकर आवाज़ें निकालने लगा था. वह सब अपनी मनभावन शिकारगाह में जो लौट आए थे.

उन सियारों की चीख-पुकार *'लंबी चीख'* के शाही कानों तक पहुँची. यह आवाज़े सुनकर उसके लिए अपने को रोक पाना असंभव था. अपने साथी सियारों की पुकारों का उत्तर देने की इच्छा उसके मन में बहुत प्रबल थी.

'लंबी चीख' भूल गया कि वह जंगल के जानवरों का राजा था. आकाश में अभी-अभी उदय हुए चाँद की ओर उसने अपना मुँह किया और जीवन की सबसे ऊँची और सबसे लंबी चीख मारी.

जब जंगल के अन्य जानवरों ने राजा को सियारों की तरह चीखते सुना तो वह सब हैरान हो गए.

वह सब दौड़ते हुए, रेंगते हुए, उड़ते हुए जंगल से बाहर आए. अचानक सब ने देखा कि चमकीली, नीले रंग की खाल वाला वह पशु एक सियार था. यह जान कर कि उन सब के साथ धोखा हुआ था, वह आग बबूला हो गए.

गुर्राते हुए, फुफकारते हुए, चीखते हुए वह सब सियार पर झपटे और खदेड़ कर उसे वहाँ से भगा दिया.

नीला सियार अब जंगल का राजा न रहा था.

'लंबी चीख' को फिर से खाना जुटाने के लिए शिकार करना पड़ता है. उसकी खाल अभी भी नीली है पर उसका रंग फीका पड़ रहा है.

शीघ्र ही वह अपने असली रंग का हो जायेगा. फिर शायद दूसरे सियार उसे झुंड में वापस आकर संध्या का अपना गीत गाने दें.

इस बीच भारत के लोग एक नीले सियार की कहानी सुनाते हैं जो रात में अकेले बैठ कर चीखता है-एक चीख जो इतनी लंबी और दुखद होती है जितनी कि अब तक किसी ने नहीं सुनी.

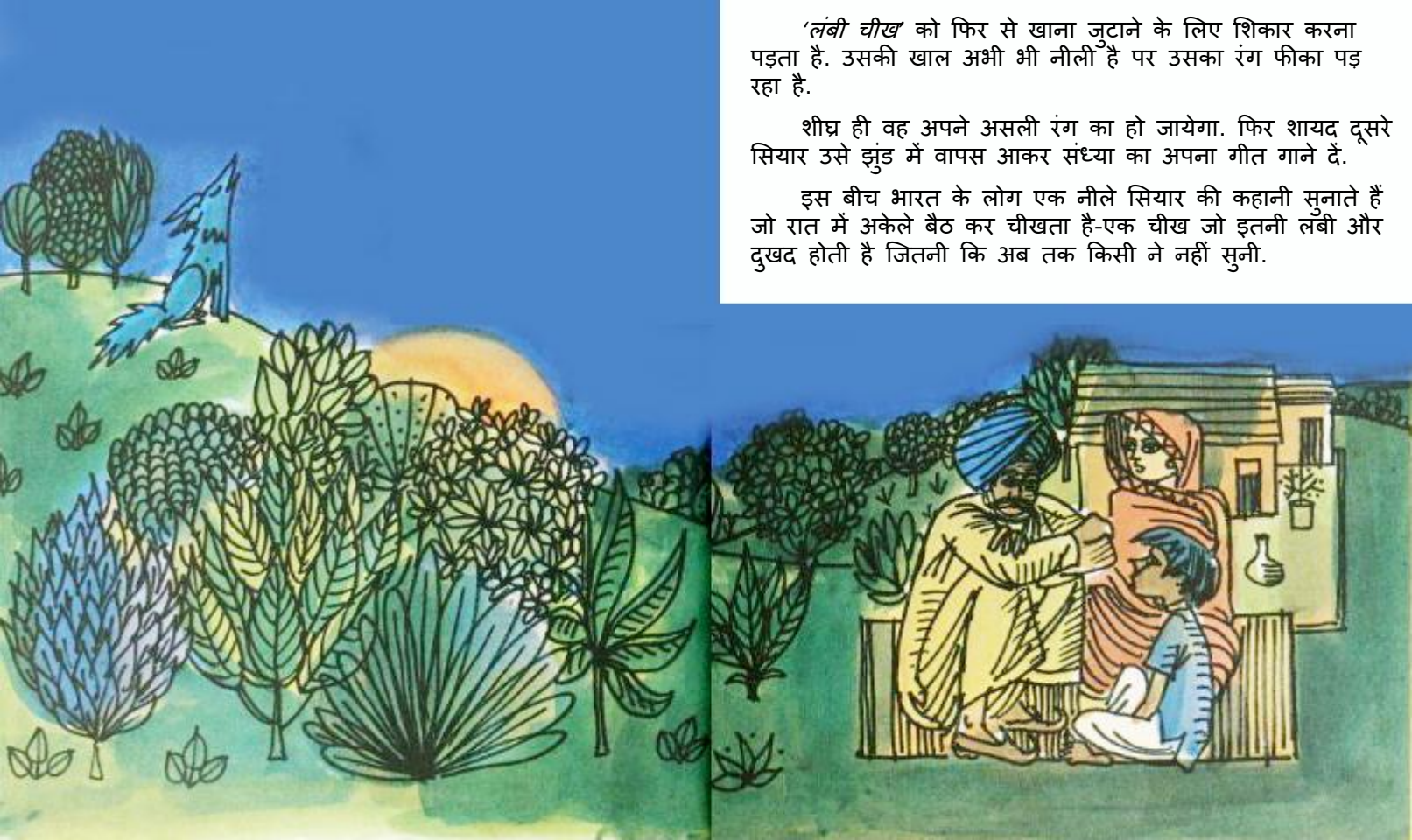

कहानी के विषय में

'नीला सियार' एक पुरातन कहानी है. इसे संस्कृत भाषा में आज से कोई 2200 वर्ष पहले लिखा गया था. विद्वानों का मानना है कि यह कहानी उससे भी पुरानी थी.

यह कहानी पंचतंत्र की चौरासी कहानियों में से एक है. पंचतंत्र कथाओं का एक संग्रह है, इसकी सारी कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि हमें जीवन में अच्छा व्यवहार कैसे करना चाहिए.

ऐसा समझा जाता है कि पंचतंत्र की कहानियाँ एक सन्यासी, विष्णु शर्मा, ने लिखी थीं. एक राजा के तीन मूढ़ राजकुमारों को शिक्षित करने के लिए विष्णु शर्मा यह कहानियाँ लिखी थीं.

पंचतंत्र की कहानियों के कई संस्करण संसार के अलग-अलग देशों में प्रकाशित हो चुके हैं. अंग्रेज़ी भाषा में पहला संस्करण विलियम कैक्स्टन ने प्रकाशित किया था. मध्य-कालीन यूरोप में सबसे पहले छपने वाली किताबों में पंचतंत्र का जर्मन अनुवाद भी था.